

शंघाई सहयोग संगठन

Last Updated: July 2022

SCO के बारे में:

- SCO एक स्थायी अंतर-सरकारी अंतरराष्ट्रीय संगठन है।
- यह एक यूरोशियन राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संगठन है, जिसका उद्देश्य संबंधित क्षेत्र में शांति, सुरक्षा व स्थिरता बनाए रखना है।
- इसकी स्थापना 15 जून, 2001 को शंघाई में हुई थी।
- SCO चार्टर पर वर्ष 2002 में हस्ताक्षर किए गए थे और यह वर्ष 2003 में लागू हुआ।
- यह चार्टर एक संवैधानिक दस्तावेज है जो संगठन के लक्ष्यों व सदिधांतों आदि के साथ इसकी संरचना तथा प्रमुख गतिविधियों को रेखांकित करता है।
- रूसी और चीनी SCO की आधिकारिक भाषाएँ हैं।

हालिया घटनाक्रम

- उज़्बेकस्तान में सितंबर 2022 में होने वाले एससीओ शिखर सम्मेलन में, वाराणसी को 2022-23 हेतु एससीओ क्षेत्र की पहली " पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी" के रूप में चुना गया है।
- भारत वर्ष 2023 में SCO शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा।

गठन

- वर्ष 2001 में SCO की स्थापना से पूर्व कज़ाकस्तान, चीन, कर्गिस्तान, रूस और ताजकिस्तान 'शंघाई-5' नामक संगठन के सदस्य थे।
- वर्ष 1996 में 'शंघाई-5' का गठन वसिनीकरण वार्ता की शुरुआत से हुआ था, जो चीन के साथ चार पूर्व सोवियत गणराज्यों ने सीमाओं पर स्थिरता के लिये किया था।
- वर्ष 2001 में उज़्बेकस्तान के संगठन में प्रवेश के बाद 'शंघाई-5' को SCO नाम दिया गया।
- वर्ष 2017 में भारत तथा पाकिस्तान को इसके सदस्य का दर्जा मिला।

सदस्य देश

- SCO के आठ सदस्य देश
 - कज़ाखस्तान
 - चीन
 - कर्गिस्तान
 - रूस
 - ताजकिस्तान
 - उज़्बेकस्तान
 - भारत
 - पाकिस्तान
- [एससीओ में ईरान और बेलारूस के दो नए सदस्य होने की संभावना है।](#)

पर्यवेक्षक देश

- अफगानिस्तान, बेलारूस, ईरान और मंगोलिया SCO के पर्यवेक्षक देशों में शामिल हैं।

वार्ता साझेदार देश

- अज़रबैजान, आर्मेनिया, कंबोडिया, नेपाल, तुर्की और श्रीलंका इस संगठन के वार्ता साझेदार देश हैं।

SCO के लक्ष्य

- सदस्य देशों के मध्य परस्पर विश्वास तथा सद्भाव को मज़बूत करना।
- राजनैतिक, व्यापार एवं अर्थव्यवस्था, अनुसंधान व प्रौद्योगिकी तथा संस्कृति में प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देना।
- शिक्षा, ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण, इत्यादि में क्षेत्रों में संबंधों को बढ़ाना।
- संबंधित क्षेत्र में शांति, सुरक्षा व स्थिरता बनाए रखना तथा सुनिश्चिता प्रदान करना।
- एक लोकतांत्रिक, नृपिपक्ष एवं तर्कसंगत नव-अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था की स्थापना करना।

SCO के मार्गदर्शक सिद्धांत

- पारस्परिक विश्वास, आपसी लाभ, समानता, आपसी परामर्श, सांस्कृतिक विविधता के लिए सम्मान तथा सामान्य विकास की अवधारणा पर आधारित आंतरिक नीति।
- गुटनिरपेक्षता, किसी तीसरे देश को लक्ष्य न करना तथा उदार नीति पर आधारित बाह्य नीति।

SCO की संरचना

- **राष्ट्र प्रमुखों की परिषद:** यह SCO का सर्वोच्च निकाय है जो अन्य राष्ट्रों एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ अपनी आंतरिक गतिविधियों के माध्यम से तथा बातचीत कर अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर विचार करती है।
- **शासन प्रमुखों की परिषद:** SCO के अंतर्गत आर्थिक क्षेत्रों से संबंधित मुद्दों पर वार्ता कर निर्णय लेती है तथा संगठन के बजट को मंजूरी देती है।
- **वर्धित मंत्रियों की परिषद:** यह दैनिक-परतद्विदिनी गतिविधियों से संबंधित मुद्दों पर विचार करती है।
- **क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना (RATS.):** आतंकवाद, अलगाववाद, पृथक्तावाद, उग्रवाद तथा चरमपंथ से निपटने के मामले देखता है।
- **शंघाई सहयोग संगठन सचिवालय:** यह सूचनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा संगठनात्मक सहायता प्रदान करने हेतु बीजिंग में अवस्थित है।

SCO की प्रमुख गतिविधियाँ

- प्रारंभ में SCO ने मध्य एशिया में आतंकवाद, अलगाववाद तथा उग्रवाद को रोकने हेतु परस्पर अंतर-क्षेत्रीय पर्याप्तों पर ध्यान केंद्रित किया।
- वर्ष 2006 में, वैश्विक वित्त पोषण के स्रोत के रूप में अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थों की तस्करी को शामिल करने हेतु संगठन की कार्यसूची को विस्तार दिया गया।
- वर्ष 2008 में SCO ने अफगानिस्तान में स्थिरता लाने के लिए सक्रिय रूप से भाग लिया।
- लगभग इसी समय SCO ने विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों में हस्तिता लेना शुरू किया।
- इससे पहले वर्ष 2003 में अपने भौगोलिक क्षेत्र के भीतर मुक्त व्यापार क्षेत्र की स्थापना हेतु SCO सदस्य देशों ने बहुपक्षीय व्यापार एवं आर्थिक सहयोग हेतु 20 वर्ष के कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए।

SCO की विशेषताएँ

- SCO में वैश्विक जनसंख्या का 40%, वैश्विक GDP का लगभग 20% तथा यह यूरेशिया के क्षेत्रफल का 60% है।
- अपने भौगोलिक महत्त्व के चलते SCO एशियाई क्षेत्र में रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।
- अपनी इस विशेषता के कारण SCO मध्य एशिया को नियंत्रित करने तथा क्षेत्र में अमेरिकी प्रभाव को सीमित करने में सक्षम है।
- SCO को उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO) के समकक्ष के रूप में भी जाना जाता है।

SCO के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

- SCO की सुरक्षा चुनौतियों में आतंकवाद, उग्रवाद तथा अलगाववाद का मुकाबला करना; मादक पदार्थों तथा हथियारों की तस्करी को रोकना एवं अवैध आप्रवासन की रोकथाम करना इत्यादि शामिल हैं।
- भौगोलिक रूप से निकटता होते हुए भी संगठन के सदस्यों के इतिहास, पृष्ठभूमि, भाषा, राष्ट्रीय हितों एवं सरकार, संपन्नता व संस्कृति के रूप में समृद्ध विविधता SCO के निर्णयों लेने की प्रक्रिया को चुनौतीपूर्ण बनाते हैं।

भारत के लिये SCO का महत्त्व

- SCO को इस समय दुनिया का सबसे बड़ा क्षेत्रीय संगठन माना जाता है और इसमें चीन तथा रूस के बाद भारत तीसरा सबसे बड़ा देश है। इस संगठन में शामिल होने से भारत का अंतरराष्ट्रीय महत्त्व बढ़ा है।
- भारतीय हितों की जो चुनौतियाँ हैं, चाहे वे आतंकवाद से जुड़ी हों, ऊर्जा की आपूर्ति हो या प्रवासियों का मुद्दा...ये सभी मुद्दे भारत और SCO दोनों के लिए अहम हैं और ऐसे में भारत के इस संगठन से जुड़ने से दोनों को परस्पर लाभ होगा।

- SCO की सदस्यता मिलने के साथ ही अब भारत को एक बड़ा वैश्विक मंच मलि गया है। SCO यूरेशिया का एक ऐसा राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संगठन है जिसका केंद्र मध्य एशिया और इसका पड़ोस है। ऐसे में इस संगठन की सदस्यता भारत के लिए कई मौके उपलब्ध करवाने वाली साबति हो सकती है।
- चूँकि चीन SCO के माध्यम से कषेत्र में अपने रणनीतिक हतियों को पूरा करना चाहता है तो भारत भी इस स्थितिका लाभ उठाते हुए पाकसितान प्रायोजति आतंकवाद पर लगाम लगाने के लिए चीन का सहयोग मांग सकता है, जैसा उसने हाल ही में अज़हर मसूद के मामले में कया और उसे अंतरराष्ट्रीय आतंकी घोषति करवाया।
- मध्य एशिया के देश जो प्राकृतिक गैस-तेल भंडार के मामले में धनी हैं, उनके साथ संबंधों को वसितार देने में SCO भारत के लिए एक अच्छा ज़रिया बन सकता सकता है। भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने और रूस व यूरोप तक व्यापार के ज़मीनी मार्ग खोलने के लयि इस मंच का इस्तेमाल करना चाहयि।
- भारत के लयि SCO की सदस्यता कषेत्रीय एकीकरण, सीमाओं के पार संपर्क एवं स्थरिता को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान कर सकती है।
- SCO की कषेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना (RATS) के माध्यम से भारत गुप्त सूचनाएँ साझा करने, कानून प्रवर्तन और सर्वोत्तम प्रथाओं अथवा प्रौद्योगिकियों के विकास की दशिया में कार्य कर अपनी आतंकवाद वरिधी क्षमताओं में सुधार कर सकता है।
- SCO के माध्यम से भारत मादक पदार्थों की तस्करी तथा छोटे हथियारों के प्रसार पर भी रोक लगाने का प्रयास कर सकता है।
- आतंकवाद एवं कट्टरतावाद की सामान्य चुनौतियों को लेकर साझा प्रयास कयि जा सकते हैं।
- लंबे समय से अटकी हुई **तापी** (तुर्कमेनसितान-अफगानसितान-पाकसितान-भारत) पाइपलाइन जैसी परियोजनाओं पर काम शुरू करने में तथा **IPI** (ईरान-पाकसितान-भारत) पाइपलाइन को SCO के माध्यम से सहायता मलि सकती है।
- भारत तथा मध्य एशिया के बीच व्यापार में आने वाली प्रमुख बाधाओं को दूर करने के लयि SCO सहायता कर सकता है, क्योंकि यह मध्य एशिया के लिए एक वैकल्पिक मार्ग के रूप में कार्य करता है।
- SCO के माध्यम से सदस्य देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों का वसितार करते हुए भारत को मध्य एशियाई देशों के साथ सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, बैंकगि, वित्तीय तथा फार्मा उद्योगों हेतु एक वशाल बाज़ार मलि सकता है।
- सावधानी से इस मंच का इस्तेमाल करते हुए भारत अपने इस वसितारति पड़ोस (मध्य एशिया) में सक्रयि भूमिका नभिा सकता है तथा साथ ही यूरेशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करने का प्रयास भी कर सकता है।
- सबसे बड़ी बात यह कि SCO भारत को अपने पुराने तथा वशिवसनीय मतिर रूस के साथ अपने चीन और पाकसितान जैसे चरि प्रतदिवंदवियों के साथ जुड़ने के लिए एक साझा मंच प्रदान करता है।

SCO में भारत के लयि चुनौतियाँ

पाकसितान भी SCO का सदस्य है और वह भारत की राह में दुश्वारियों तथा कठनाइयों का कारण लगातार बनता है। ऐसे में भारत की स्वयं को मुखर तौर पर पेश करने की क्षमता प्रभावति होगी। इसके अलावा चीन एवं रूस के SCO के सह-संस्थापक होने और इसमें इन देशों की प्रभावी भूमिका होने की वज़ह से भारत को अपनी स्थिति मज़बूत बनाने में कठनाई का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही SCO का रुख परंपरागत रूप से पश्चिम वरिधी है, जिसकी वज़ह से भारत को पश्चिम देशों के साथ अपनी बढ़ती साझेदारी में संतुलन कायम करना होगा।

SCO के लयि नए मौके और चुनौतियाँ

2001 में अपनी स्थापना के बाद से 2017 में भारत और पाकसितान को SCO में शामिल करना इसका पहला वसितार था। दरअसल, SCO एक नए तरह का कषेत्रीय संगठन है जो शीतयुद्ध के बाद के काल में सुरक्षा, अर्थशास्त्र, राजनीति और संस्कृति जैसे कषेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देता है। **शंघाई वचिारधारा** द्वारा मार्गदर्शति “**आपसी वशिवास, आपसी लाभ, समानता, परामर्श, वभिन्न सभयताओं के लयि सम्मान और साझा विकास**” की तलाश में SCO एक आदर्श का पालन करता है। इसके तहत खुलेपन को बढ़ावा देते हुए न तो किसी प्रकारसंधि की जाती है और न ही किसी देश या कषेत्र के अंदरूनी मामलों में **दखलंदाज़ी** की जाती है। यही कारण है कि इसने सदस्य देशों के बीच एक नए तरह का संबंध और कषेत्रीय सहयोग स्थापति कया है। इसमें स्थायी शांति और मैत्री, अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लयि सुरक्षा की नई संकल्पनाएँ पेश करना, सहयोग और कूटनीति समाहति है, जो पुरानी हो चुकी शीतयुद्ध की मानसकति के बलिकूल वपिरीत है तथा अंतरराष्ट्रीय सदिधांतों और प्रथाओं को समृद्ध बनाने वाली है।

SCO का सदस्य बन जाने से यद भारत और चीन के आपसी तालमेल में बढ़ोतरी होती है तो अमेरिका के वैश्विक दबदबे का सामना करने के लयि यह दोनों ही देशों के लिए लाभकारी सदिध होगा तथा एशिया-प्रशांत कषेत्र में अपना वर्चस्व कायम करना अमेरिका के लयि आसान नहीं होगा।